IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

IJARSCT

Impact Factor: 6.252

Volume 2, Issue 1, October 2022

नगरीय महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का एक अध्ययन (रीवा नगर के विशेष सन्दर्भ में)

संदीप चौरसिया[1] and डॉ. शाहेदा सिद्दीकी[2]

शोध छात्र, (समाजशास्त्र)[1]

प्राध्यापक, (समाजशास्त्र)[2]

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

शोध सारांश :

समाज के विकास के लिए नगरीय महिलाओं के सशक्तिकरण से प्रभावी तरीका कुछ नहीं हैं। दुनिया की 50 प्रतिशत आबादी नगरीय महिलाओं की है। ''महिला सशक्तिकरण'' की आठवें सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्यों में प्रमुखत : से शामिल किया गया है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि ''जब तक महिलाओं की स्थिति नहीं सुधरती तब तक विश्व कल्याण की महिलाओं की कोई संभावना नहीं है। पक्षी के लिए एक ही पंख से उड़ना संभव नहीं है।'' महिला विकास एवं आर्थिक सुधार द्वारा ही समाज सशक्त हो सकता है। स्वयं प्रधानमंत्री ने भी कहा कि ''एक राष्ट्र हमेशा ही अपने यहाँ की महिलाओं से सशक्त बनता है। वह माँ, बहन और पत्नी की भूमिकाओं में अपने नागरिकों का पालन–पोषण करती है और तब जाकर ये सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपनी भूमिका निभाते हैं।'' इस शोध शोध पत्र को तैयार करने में अध्ययन क्षेत्र के रूप में रीवा नगर को चुना गया है। 50 उत्तरदाताओं का चयन सविचार निदर्शन के माध्यम से करके साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से तथ्य एकत्र किये गये है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

मुख्यशब्द : महिला सशक्तिकरण, आत्म निर्भर, शैक्षाणिक स्थिति, आदि।

प्रस्तावना :

प्रत्येक देश की आधी आबादी महिलाओं पर आधारित होती है। लेकिन यह एक विडंबना ही है कि समाज में महिलाओं की स्थिति अत्यंत विरोधाभासी रही है। शिक्षा से वंचित वर्गो में पूरे विश्व में सबसे बड़ा हिस्सा महिलाओं का है। विभिन्न योजनाओं द्वारा केन्द्र एवं राज्यों ने महिलाओं के आत्म–विश्वास, आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना का प्रयास किया है। समाज राजनीति व अर्थव्यवस्था में महिलाओं के योगदान को रेखांकित करने हेतु कार्यक्रम चलाये गये। सूचना, ज्ञान, कौशल, शिक्षा, द्वारा आर्थिक स्वावलंबन स्थापित करने हेतु प्रयास किये जा रहे हैं। वर्तमान में कोई क्षेत्र हो या शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय, सेवा (नौकरी) सेना स्वास्थ्य

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
IJARSCT
Impact Factor: 6.252
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022

अथवा सामाजिक समस्याओं को दूर करने हेतु विभिन्न समितियों का गठन हो, प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है तथा सकारात्मक परिवर्तन हुए। महिलाओं की सशक्तता हेतु स्वास्थ्य, शिक्ष, अर्थव्यवस्था, प्रशासन हाउसिंग और इंफ्रास्ट्रक्चर वातावरण को सक्षम बना रहे हैं। सुरक्षित पेयजल तथा स्वच्छता, खेती, सुरक्षा तथा निजी एवं परम्परागत कानूनों की समीक्षा करने तथा महिलाओं हेतु अनुकूल माहौल बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

आज भी शिक्षा एवं सशक्ता कई क्षेत्रों में सबसे शक्तिशाली लोगों में कई महिलाएँ हैं। जिनमें इन्द्रान्यी, किरण मजूमदार शा और चन्दा कोचर के नाम से प्रमुख है जहाँ भारतीय वायुसेना में भावना कंठ, अवनि चतुर्वेदी और मोहना सिंह ने परचम लहराया वहीं स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बाद 2015 के गणतन्त्र दिवस पर सेना के तीनों अंगो थलसेना, वायुसेना तथा नौसेना की पूरी महिलाओं की भी टुकड़ी शामिल थी। महिलाएं अपनी शिक्षा एवं शक्ति से यह हासिल कर सकीं। ये महिलाएं महिला विकास के परे सोचने और महिलाओं के नेतृत्व में विकास की ओर बढ़ रही हैं। उत्तम शिक्षा एवं दक्षता प्रदान करने के लिए सरकार ने प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में अनेक कार्यक्रम लागू किये। मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्ष का अधिकार अधिनियम 2009 लागू किया गया। जिसके द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के तहत प्राथमिक और उच्च शिक्षा प्राथमिक स्तर पर शिक्षा को सर्व व्यापक बनाने का काम शुरू किया गया। इससे देश के ग्रामीण शहरी क्षेत्रों में स्कूलों दाखिला मे वृद्धि तथा स्कूल छोड़ने में कमी आई। सर्व शिक्षा अभियान के तहत एक राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम चलाया गया जिसका नाम है पढ़े भारत बढ़े भारत। इसके द्वारा कक्षा एक या कक्षा दो के बच्चों को पढ़ने, किसी भाषा में अनुच्छेद लिखने और गणित का स्तर ज्ञान विश्वस्तरीय हो। इसके द्वारा प्रत्येक स्कूल में 800 शिक्षण घण्टे तथा 200 स्कूली दिवस अवश्य हो। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (रूसा) को उच्च शिक्षा के समग्र विकास मे लागू किया जा रहा है एवं शिक्षा ऋण हेतु प्रधानमंत्री विद्या लक्ष्मी कार्यक्रम शुरू किया गया जिसके द्वारा विद्यार्थी जानकारियां हासिल कर सकते हैं और बैंको द्वारा प्रदान किये जाने वाले शिक्षा ऋण के लिए आवेदन कर सकते हैं।

आर्थिक सुरक्षा एवं सशक्तिकरण :

महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत करने एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाओं का क्रियान्वन किया गया। महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण गारंटी योजना और राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन में जहाँ एक ओर ग्रामीण महिलाओं को आजीविका उपलब्ध कराई है। वहीं उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान करते हुए सशकत बनाया गया है। प्रधानमंत्री जन–धन योजना के अन्तर्गत योजना द्वारा बेटियों की शिक्षा एवं आर्थिक मजबूती को बेहतर बनाया तथा प्रत्येक का बैंक में खाता खोला गया। महिलाओं का आर्थिक रूप से मजबूती के लिए कामकाजी महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ना वैश्विक स्तर की मुख्यधारा के बाजारों में प्रवेश कराना है। महिलायें अर्थव्यवस्था में एक कामगर के रूप में, सेवा करने वाली के रूप में, वित्तीय जरूरत पूरी करने में,

कर्ज देने और लेने के लिए, संपत्तियाँ तैयार करने में, संसाधन इकट्ठा करने, एक भौतिक गुणवत्ता को बेहतर बनाने में सहयोग दे रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, परिवाद, लघु व्यवसाय द्वारा आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने एवं देश के विकास में योगदान दे रहीं हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार :

सशक्तिकरण एक समर्थकारी प्रक्रिया है। जब स्वास्थ्य, शिक्षा, सुरक्षा और वित्तीय सहित अन्य की हालत में सुधार होगा, तभी महिलाओं को सशक्त माना जायेगा। वर्ष 2005 में जिसे राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NRHM) ने ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न स्तरों पर बेहतर बुनियादी सुविधाओं दवाओं और उपकरणों एवं स्वास्थ्य केन्द्रों में मानक संसाधन की उपलब्धता के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने में सुधार किया है। कुपोषण भारत की एक विषम समस्या है इसके निस्तारण के लिए समेकित बाल विकास योजना को सार्वभौमिक एवं सशक्त बनाया गया। मातृ मृत्यु दर को कम करने के लिए सरकार द्वारा कई उपाय किये गये इसमें संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देना, जननी सुरक्षा योजना, सार्वजनिक स्वास्थ्य केन्द्रों में सभी गर्भवती महिलाओं के सीजेरियन सहित मुफ्त एवं सस्ते प्रसव के लिए जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम, माताओं और बच्चों के लिए जच्चा–बच्चा संरक्षण कार्ड, तथा टीकाकरण आदि शामिल हैं।

भारत सरकार की ओर से अनुसूचित जाति, जनजाति और पिछड़े वर्ग की बालिकाओं के लिए सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में आवासीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की स्थापना कस्तूरबा गाँधी विद्यालय योजना आदि की शुरुआत की गई है। समाज में महिलाओं के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तन हेतु ऐतिहासिक एवं वैदिक काल की स्थितियों को स्पष्ट किया जा रहा है जिसमें महिला एवं पुरुष दोनों को समान शिक्षा के अवसर प्राप्त हैं। मैत्रेयी, गार्गी, मदालसा, लोपामुद्रा, अनुसूया, जाबाली आदि विदूषी महिलाओं ने वैदिक साहित्य में अमूल्य योगदान दिया है। महिलाओं की सुरक्षा एवं सशक्तता हेतु कई अधिनियम बनाये गये जिसमें घरेलू हिंसा (प्रतिशोध) अधिनियम 2005 इसके द्वारा महिलाओं पर होने वाली घरेलू हिंसा में कमी आई है। दहेज निवारक अधिनियम, नौकरी एवं व्यवसाय पाने का अधिकार एवं सर्वाधिक महत्वपूर्ण सम्पत्ति में अधिकार मिलना है। इस प्रकार कई स्तरों पर समाज ने महिलाओं की स्वतंत्रता को स्वीकार किया है तो वही सरकार भी कई तरह के प्रयास कर रही है। जिससे भारत एक बेहतर भविष्य का निर्माण कर सके। सरकारी सहभागिता जहाँ अपनी कानूनी प्रक्रिया द्वारा महिलाओं की स्थिति को मजबूत बना रही है। वह समाज की इस वास्तविकता को स्वीकार करने लगा है कि शिक्षित समर्थ एवं सशक्त महिला, लड़की से ही परिवार एवं समाज का विकास एवं निर्माण हो सकता है।

पूर्व साहित्य समीक्षा

रमा, शर्मा एवं एम.के. मिश्रा (2010) महिला विकास इस पुस्तक में लेखक ने महिला विकास के प्रतिमान, भारत में महिला विकास के कार्यक्रम, भारतीय समाज में महिलाओं के विविध रूप, महिला अधिकार सामाजिक विकास, आरक्षण से महिलाओं का विकास, शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएं आदि विषयों पर चर्चा की गई है।

मंजुलता, छिल्लर (2010) भारतीय नारी शोषण के बदलते आयाम इस पुस्तक में लेखक ने बताया है कि स्वतन्त्रता के 69 वर्ष के बाद भी महिलाओं के प्रति समाज में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। आज भी नारी का मानसिक, शारीरिक शोषण होता है। इस कारण महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार देकर उनको सशक्त बनाने का प्रयास किया है।

वीरेन्द्र सिंह, यादव (2010) इक्कीसवीं सदी का महिला सशक्तिकरण मिथक एवं यथार्थ इस पुस्तक में लेखक ने बताया है कि महिलाऐं समाज का आधा हिस्सा होने के कारण से महिला एवं विकास का अंतरंग सम्बन्ध है।

शोध कार्य का उद्देश्य :

1. महिलाओं की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना है।
2. महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
3. जिले में महिलाओं के शिक्षण संस्था में योगदान का अध्ययन किया गया है।
4. महिलाओं का हमारे सामाजिक कार्यो में योगदान व सहभागिता का अध्ययन किया गया है।

उपकल्पना :

1. शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध विषय को ध्यान में रखते हुए निम्न पद्वतियों का उपयोग किया गया है –

निदर्शन पद्धति :

अध्ययन को स्वरूप देने के लिए उद्देश्यपरक निर्देशन के अन्तर्गत रीवा नगर का चयन किया गया। रीवा नगर में रह रहें लोगों का चयन निदर्शन के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरण :

अध्ययन को स्वरूप प्रदान करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से रीवा नगर में निवास कर रहे महिलाओं से प्रश्नावली के माध्यम से उनकी राय और विचारों को जानने के प्रयास किया गया है। तथ्य

संकलन के लिए प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। प्रश्नावली के अंतिम प्रश्न के रूप में खुला प्रश्न दिया गया जिसके माध्यम से प्रतिभागियों के विचारों को भी शोध में शामिल किया गया है। अनुसूची–भाषाई विविधता होने के कारण, कुछ प्रतिभागियों को प्रश्नावली समझने में समस्या होने के कारण, उनसे राय और विचार जानने के लिए प्रश्नावली का उपयोग यहाँ अनुसूची के रूप में भी किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकडों का प्रस्तुतिकरण :

प्रस्तुत शोध में अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। कि महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका इसकी लोकप्रियता और कार्य पद्धति को केन्द्र में रखकर यह शोध कार्य किया गया है। तथ्यों और आंकड़ों को अनूसूची के माध्यम से एकत्रित कर उनका विश्लेषण किया गया है। प्रस्तुत शोध रीवा नगर में रहने वाले उत्तादाताओं पर विशेष रूप से केन्द्रित है। महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका को ज्ञात करने के लिए जो जानकारी एकत्र की गई है, उसे तालिका क्रमांक 01 में दर्शाया गया है

सारणी क्रमांक 01 : क्या महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका है।

क्रमांक	महिला सशक्तिकरण में शिक्षा में भूमिका है।	संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	41	82
02	नही	06	12
03	पता नही	03	06
योग –		20	100

स्रोत–स्वंय के सर्वेक्षण द्वारा

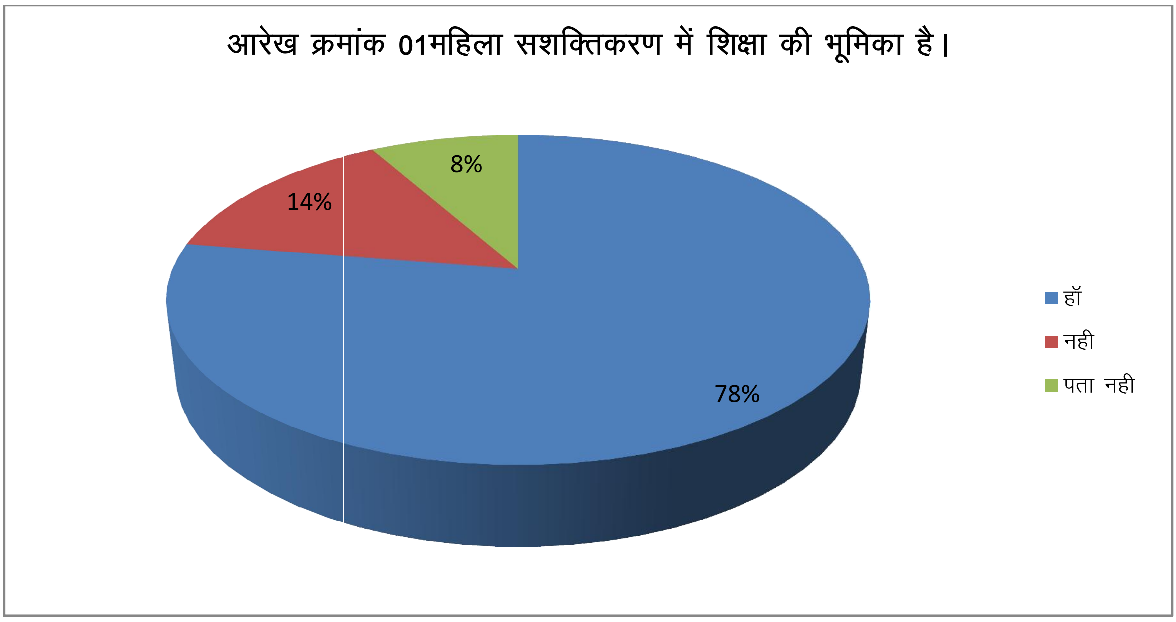

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 1, October 2022
Impact Factor: 6.252

उपरोक्त सारणी क्रमांक 01 में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका है। में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 41 (82 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका है तथा 6 (12 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका नही है जबकि 14 (28 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को इसके बारे में कोई जानकारी नही है। शिक्षा में महिलाओं की सहभागिता सम्बन्धी जानकारी को तालिका क्रमांक 02 में दर्शाया गया है –

सारणी क्रमांक 02 : क्या शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी है

क्रमांक	महिला सहभागिता बढ़ी है।	संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	39	72
02	नही	07	14
03	पता नही	04	08
योग –		50	100

स्रोत–स्वंय के सर्वेक्षण द्वारा

आरेख क्रमाक 02 शिक्षा के क्षेत्र में महिलाऍ बढ़ –चढ़ कर हिस्सा ले रही है।

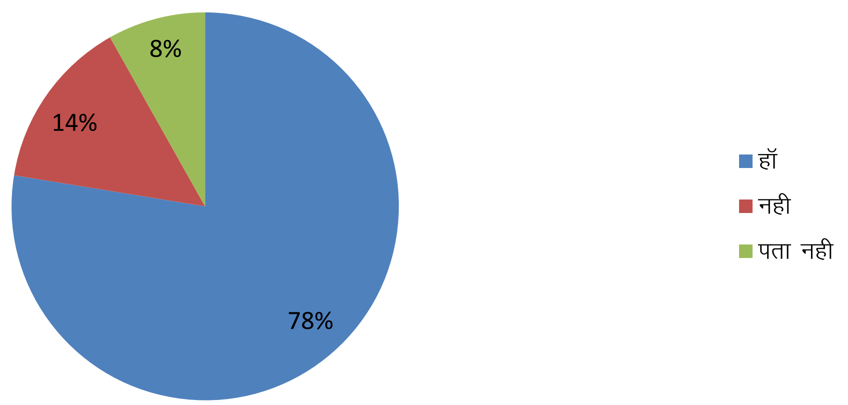

उपरोक्त सारणी क्रमांक 02 में शिक्षा के क्षेत्र में महिलाऍ बढ़ –चढ़ कर हिस्सा ले रही है। में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 39 (78 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में महिलाऍ बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले रही है तथा 7 (14 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में महिलाऍ बढ़–चढ़ कर हिस्सा नही ले रही है। जबकि 04 (08 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को इसके बारे में कोई जानकारी नही है। शिक्षा के कारण महिलाओं में परिवर्तन सम्बन्धी विवरण तालिका क्रमांक 03 में प्रदर्शित है –

IJARSCT

ISSN (Online) 2581-9429

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)

Impact Factor: 6.252

Volume 2, Issue 1, October 2022

सारणी क्रमांक 03 : क्या शिक्षा के कारण महिलाओं में बदलाव आया है।

क्रमांक	महिलाओं में बदलाव आया है।	संख्या	प्रतिशत
01	हॉ	39	78
02	नही	07	14
03	पता नही	04	08
योग –		50	100

स्रोत–स्वंय के सर्वेक्षण द्वारा

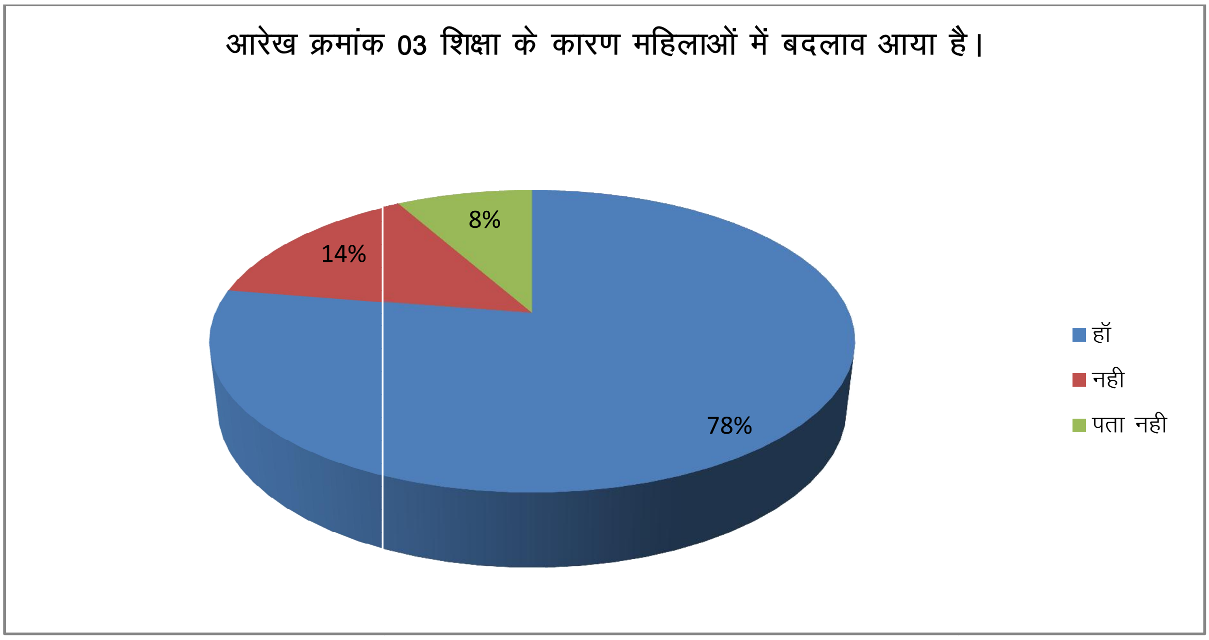

उपरोक्त सारणी क्रमांक 03 में शिक्षा के कारण महिलाओं में बदलाव आया है में कुल न्यादर्शो की संख्या 50 में से 39 (78 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा के कारण महिलाओं में बदलाव आया है। तथा 7 (14 प्रतिशत) उत्तरदाताओं ने कहा कि शिक्षा के कारण महिलाओं में बदलाव नही आया है। जबकि 04 (08 प्रतिशत) उत्तरदाताओं को इसके बारे में कोई जानकारी नही है।

उपकल्पना का परीक्षण –

72 प्रतिशत न्यादर्शो द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में महिला सहभागिता के प्रति सहमति व्यक्त की गई है, अतः हमारी उपकल्पना तथ्य संग्रहण के पश्चात सत्य साबित होती है कि '' शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की सहभागिता बढ़ी है।'' (देखें तालिका क्रमांक 02)

शोध निष्कर्ष:

शिक्षा ने महिलाओं को बहुत तेजी से सशक्त बनाया और महिलाएं जहॉं शिक्षित हुई, वहॉं सबसे तेज गति से सशक्तिकरण हुआ है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार है –

1. 82 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका के प्रति स्वीकृति दी है। इससे स्पष्ट होता है कि महिलाएं भी शिक्षा के माध्यम से स्वंय को सबल बनाने में रूचि लेने लगी है।
2. स्ही कारण है कि शिक्षा के क्षेत्र में महिलाएं बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने लगी है, ऐसा 72 प्रतिशत न्यादर्शो को माना है। यह भी महिलाओं के विकास का सकारात्मक पहलू है।
3. शिक्षा के कारण महिलाओं में परिवर्तन को 78 प्रतिशत न्यादर्श मान्य करते है। सभी क्षेत्रों में महिलाओं में आया सकारात्मक परिवर्तन समाज हित में है।

सुझाव :

- शैक्षणिक प्रक्रिया द्वारा उन्हें स्वयं के बारे में अच्छा महसूस करने वाली, रचनात्मकता, आत्म सम्मान जाग्रत करने वाली प्रसन्नता एवं सशक्त बनाने वाली शिक्षा देनी चाहिये।
- महिलाओं को लम्बे समय से आसानी से उपलब्ध होने वाला संसाधन माना गया है इस सोच से बाहर निकलना होगा तथा दुनिया को यह समझना होगा कि महिलाएँ पूरे विश्व के लिए एक अनमोल सम्पदा हैं जो केवल अच्छे–बुरे समय में तकलीफ झेलने के लिये नहीं बल्कि एक साथी हैं। महिलाओं के नेतृत्व को विश्वास, प्रोत्साहन को विकसित करना तथा समावेशी न्यायपूर्ण समाज का विकास करना है।
- महिलाओं को किसी भी समुदाय या अर्थव्यवस्था के लिए एक निर्णायक आधार माना जाए। उनके काम को बेहतर परिणाम दिये जाये तथा उनकी भूमिका को मान्यता दी जानी चाहिए। उन्हें मौद्रिक पुरस्कार मिलना तथा सामाजिक एवं आर्थिक सहयोग दिया जाना चाहिए।
- सवित्री बाईफूले जो कि पहली महिला शिक्षिका थी जिन्होंने पहला महिला स्कूल खोला 1848 में ऐसी महिलाओं के जीवन परिचय से समाज को परिचित कराना।
- समाज की सामाजिक आर्थिक दयनीय दशाओं का पता लगाना शैक्षिक कार्यक्रम का संचालन चाहे वो घरेलू हो या कामकाजी बाल श्रमिक हो या कम उम्र में विवाहित होना हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. एंटोनोपोलस, आर (2009): द अनपेड केयर वर्क– पेड कनेक्शन (वर्किंग पेपर 86) पॉलिसी इंटीग्रेशन एण्ड स्टैटिक्स डिपार्टमेन्ट अर्न्तराष्ट्रीय श्रम कार्यालय, जिनेवा।
2. भट्टाचार्य, ए (2015) : केयर वर्क, कैपिलिस्ट स्ट्रक्चर एण्ड वाइलेंस अगेस्ट विमेनः नेशनल कन्वेशन ऑन एडवोकेसी फॉर केयर वर्क नई दिल्ली में प्रस्तुत पेपर। महिला स्वाबलम्बन
3. घोष, जे (2015) : केयर इन दे नियो लिबरल इकनॉमिक मॉडल इंटरनेशनल पॉलिसीज एण्ड देयर इफेक्ट ऑन विमेन्स इन गर्ल्स अनपेड केयर–नेशनल कन्वेशन ऑन एडवोकेसी फॉर केयर वर्क नई दिल्ली में प्रस्तुत पेपर।
4. कुरूक्षेत्र पत्रिका के विभिन्न अंक।
5. योजना प्त्रिका के विभिन्न अंक ।